ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६०
दिनांक- शुक्रवार, २८ अगस्त, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३३.१ एवं २६.० डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९१ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ७० प्रतिशत, हवा की औसत गति ६.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण २.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन १०.२ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २९.७ एवं दोपहर में ३४.८ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में ७.४ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२९ अगस्त-०२ सितम्बर, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २९ अगस्त-०२ सितम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में मध्यम बादल देखे जा सकते हैं। अगले ३१ अगस्त के सुबह तक उत्तर बिहार के जिलों में अच्छी वर्षा की सम्भावना नहीं है, कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। ३१ अगस्त - १ सितम्बर के बीच उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है ।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३५ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २५-२७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ८-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- धान की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट की सूंडीयॉ तनो में घुसकर क्षती पहुचाती है। प्रारंभिक अवस्था में बीच का भाग भूरापन लिए सुख जाता है, परन्तु नीचली पत्तियॉ हरी रहती है। सुखी पत्तियों को खींचने से वह आसानी से बाहर निकल आती है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप की १२ ट्रैप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करे। खेतो में ५ प्रतिशत क्षतिग्रस्त पौधें दिखाई देने पर करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का अथवा फिप्रोंनिल ०.३ जी का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें।
- धान की फसल में पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू धान के पत्तियों के दोनो किनारों को रेशमी धागे से जोड़कर उसके अन्दर रहते है तथा पत्तियों की हरीत्तिमा को खाता है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें। पिछात धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।
- सितम्बर अरहर की बुआई उंचास खेत में करे। अरहर की पूसा-९ तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंषित है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग फैलाते है। इन कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- उरद् की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। बीमार पौधों की पत्तियों पर पीले सुनहरे चकत्ते पायें जाते है एवं बीमारी की उग्र अवस्था में पूरी पत्ती पिली पड़ जाती है। पत्तियॉ आकार में छोटी हो जाती है। पुष्प एवं फलन प्रभावित हो जाती है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मिट्टी जनित रोग को नष्ट करने तथा स्वस्थ फसलों के उत्पादन हेतु किसान भाई ट्राइकोडरमा फफूंद से मृदा उपचार करें। इसके लिए एक किलोग्राम ट्राइकोडरमा को १०० किलोग्राम भिंगे गोबर की खाद में अच्छी तरह मिलाकर फर्श पर फैलाकर पॉलिथिन से ढ़क देते है। ६-७ दिनों बाद गोबर खाद मिश्रित ट्राइकोडरमा को खेत की अन्तिम जूताई में शाम के समय समान रुप से प्रयोग करते है। ध्यान दें कि नमीयुक्त गोबर की मिश्रित खाद का तापमान २५-३० डिग्री बनी रहें, इसके लिए बीच-बीच में खाद को उलट-पलट करते रहें। रासायनिक खाद के साथ इसे कदापि नहीं मिलावें।
- भिंडी की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की शिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियॉ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं को जीवाणु जनित बीमारीयों से बचाने के लिए वर्षा या बाढ़ के पानी में भिंगे चारा या भूसा नहीं खिलाए। पशु के पैरों को फिटकिरी के पानी या पोटाशियम परमैगनेट के घोल से धोये। थनैला रोग से बचाव के लिए दुध दुधाई के आधे घंटे बाद तक पशुओं को बैठने न दें। दुधाई के बाद जीवाणुनाशक घोल से थनों को धो दें। सबक्लीनीकल मस्टिटिस की जाँच के लिए दुध का पी.एच. लिटमस पेपर से देखें। पी.एच. ७ से अधिक होने पर मैमिडियम, मास्टीकील, मैमीअप दवाओं का प्रयोग करें एवं खनिज मिश्रण ५० ग्राम प्रति दिन दें। पशु गृह को हवादार रखें एवं नियमित रूप से साफ सफाई पर विशेष ध्यान दें।

आज का अधिकतम तापमानः ३१.७ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.७ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः २६.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.६ डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी